हरश्चद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी

परास्नातक (राजनीति विज्ञान)

तृतीय सेमेस्टर

(नवम प्रश्न पत्र)

(आधुनिक राजनीतिक चिंतन)

डॉ. पंकज कुमार सिंह

राजनीति विज्ञान विभाग

विभागाध्यक्ष & एसोसिएट प्रोफेसर

जर्मी बेंथम

(ब्रिटिश राजनीतिक विचारक)

उपयोगितावाद
(Utilitarianism)

ब्रिटिश राजनीतिक विचारक जेरेमी बेंथम एक उदारवादी एवं उपयोगितावादी विचारक होने के साथ-साथ एक सुधारवादी विधिवेक्ता के रूप में भी जाना जाता है । बेंथम का राजनीतिक दर्शन उपयोगिता के सूत्र पर आधारित है जो ***सुखवाद (Hedonism)*** नामक एक व्यवहारिक सिद्धांत पर आधारित है। सुखवाद बेंथम के उपयोगितावादी चिंतन की आधारशिला है। सुखवाद मानवीय प्रवृत्ति पर आधारित एक अति प्राचीन विचारधारा है जिसके अवशेष प्राचीन यूनानी चिंतन व प्राचीन भारतीय चिंतन में मिलते हैं। यूनानी चिंतन में ***सेरेनाईक विचारधारा (Cyrenaic school) के संस्थापक एरिस्टिपस(Aristippus) व एपीक्यूरस (Epicurus)*** के विचारों में सुखवाल व उपयोगितावाद के तत्व दिखाई पड़ते हैं । प्राचीन भारतीय चिंतन में ***चार्वाक दर्शन*** सुखवाद पर आधारित एक विचारधारा है ।

उपयोगितावाद बेंथम की कोई मौलिक देन नहीं है। बेंथम अपने से पूर्व के अनेक विचारको जैसे ***डेविड ह्यूम, रिचर्ड कंबरलैंड, फ्रांसिस हचिसन, प्रिस्टले*** आदि के उपयोगितावादी विचारों से प्रभावित था। परंतु राजनीति विज्ञान में उपयोगितावाद का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध अध्ययन जर्मी बेंथम ने हीं किया तथा इसे लोकप्रिय और प्रभावशाली विचारधारा बनाने का श्रेय भी बेंथम को ही जाता है , अतः इसी कारण कई विद्वान इसे ***बेंथमवाद*** के नाम से भी पुकारते हैं। बेंथम के बाद भी अनेक विचारको ने उपयोगितावाद विचारधारा को न केवल अपनाया बल्कि उसे आगे भी बढ़ाया जैसे ***जे एस मिल, एलेग्जेंडर बेन, जॉन ऑस्टिन, रिकार्डो*** आदि । **बेंथम** ने स्वयं कहां है कि " *मैं मिल का आध्यात्मिक पिता था तथा मिल रिकार्डो का आध्यात्मिक पिता था अतः रिकार्डो मेरा पौत्र था* "

बेंथम ने सन् 1789 में प्रकाशित पुस्तक " ***एन इंट्रोडक्शन टू दि प्रिंसिपल्स ऑफ मोरल्स एंड लेजिसलेशन***" में उपयोगितावाद संबंधी विचारों को प्रकाशित कराया । जर्मी बेंथम के शिष्य *जे. एस मिल ने सर्वप्रथम बेंथम के विचारों को उपयोगितावाद का नाम दिया ।*

उपयोगिता का अर्थ (Meaning of Utility)

बेंथम के शब्दों में उपयोगिता का सामान्य अर्थ है किसी वस्तु,कार्य या कानून का वह गुण जिसके कारण किसी समाज या व्यक्ति को उस वस्तु से हित, लाभ, आनंद और सुख उत्पन्न हो, वही कष्ट और दुख प्राप्त न हो । सामान्य अर्थों में जिस कार्य को करने से हमें लाभ हो वह अच्छा एवं उचित है वही जिस कार्य को करने से हानि हो वह अनुचित व बुरा है। उपयोगितावादियों के अनुसार मानव के समस्त प्रेरक को में अंतिम प्रेरक सुख और दुख ही हैं।

बेंथम का उपयोगितावाद सिद्धांत सुख की प्राप्ति और दुख के निवारण का सिद्धांत है बेंथम के शब्दों में, *"हम अपने प्रत्येक कार्य,तर्क व सिद्धांत को सुख और दुख नामक दो कसौटी पर कसते हैं। कार्य की अच्छाई बुराई उससे प्राप्त सुख की प्राप्ति या दुख की प्राप्ति पर निर्भर है। सुख व दुख की प्राप्ति ही प्रत्येक कार्य की उपयोगिता का मापदंड है।*" बेंथम ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि " *प्रकृति ने मानव जाति को सदा दो स्वामियों के अधीन रखा है, पहला सुख है और दूसरा दुख है इन स्वामियों का कर्तव्य है कि वे हमें बताएं कि हमें क्या करना चाहिए ? तथा हम क्या कर सकते हैं।"*

सुख व दुख का वर्गीकरण (Classification of Pleasure and Pain)

सुख–दुख के स्वरूप को समझने के लिए बेंथम ने दोनों को अनेक भागों में वर्गीकृत किया है जहां सुख के 14 रूपों का वर्णन में किया है वही दुख के 12 रूपों का वर्णन किया है जो इस प्रकार है :–

सामान्य सुख :–

1.इंद्रिय सुख 2.वैभव सुख 3.कौशल सुख 4.मित्रता का सुख 5.यस का सुख 6.शक्ति और सत्ता का सुख 7.कल्पना का सुख 8.धार्मिक सुख 9. दया का सुख 10.निर्दयता का सुख 11.स्मृति सुख 12.आशा सुख 13.संपर्क या मिलन का सुख 14.सहायता का सुख

सामान्य दुख :–

1.दरिद्रता का दुख 2.भावना 3.हिचकिचाहट 4.शत्रुता 5. अपयश 6.धार्मिकता 7.दया 8.निर्दयता 9.स्मृति 10.कल्पना 11.आशा 12.संपर्क

कुछ सुख और दुख के रूपों में समानता भी होती है जैसे किसी संकट ग्रस्त व्यक्ति के प्रति उदारता सुख का अनुभव देता है लेकिन यदि हमें ज्ञात हो कि वह व्यक्ति ढोंगी है तो हमें उदारता से दुख भी होता है क्योंकि मानव एक भावना प्रधान प्राणी है यदि उदारता से भावनाएं आहत होती हैं तो हमें दुख प्राप्त होती है । **बेंथम** के अनुसार भावना प्रधान प्राणी होने के कारण मनुष्य के सुख–दुख अनुभव करने के सामर्थ्य अलग–अलग होती हैं बेंथम ने कुल 32 तत्वों की पहचान की है जिनसे मानव के सुख और दुख की गणना भिन्न–भिन्न हो जाती है जैसे स्वास्थ्य, कठोरता, चंचलता, मनोवृति धार्मिकता, लिंग, शिक्षा आदि । **बेंथम** ने सुख और दुख के चार स्रोत भी बताए हैं जिनसे मानव को सुख और दुख की प्राप्ति होती है जैसे भौतिक, नैतिक, राजनीतिक और धार्मिक

बेंथम में मानव के सुख–दुख को मापने का एक मापन पद्धति का भी विकास किया है जिससे मानव के सुख और दुख की मात्रा को मापा जा सकता है जिसे उन्होंने सुखवादी मापक यंत्र नाम दिया है ।

सुख या आनंद मापक यंत्र (Hedonistic Calculus) :-

किसी विचार, तर्क, सिद्धांत और कार्य की उपयोगिता निर्धारित करने में, उससे मानव को प्राप्त सुख–दुख की मात्रा का विशेष महत्व है । यदि एक कार्य से सुख की अधिक मात्रा उत्पन्न होती है तो वह कार्य उपयोगी है और दुख की मात्रा उत्पन्न होती है तो वह कार्य अनुपयोगी है परंतु समस्या यह है कि सुख दुख की मात्रा का निश्चय कैसे किया जाए ? सुख–दुख विशुद्ध रूप से मानसिक अनुभूतियां हैं जिन्हें मापना या तोलना कठिन है । सुख–दुख की मात्रा का निर्धारण करने के लिए बेंथम ने सुखवादी मापक यंत्र का खोज की जिससे किसी कार्य के उत्पन्न सुख और दुख की मात्रा के आधार पर उस कार्य को उपयोगी या अनुपयोगी के कसौटी पर कसा जा सके। **बेंथम** ने निम्न 7 कसौटीओं का वर्णन किया है जिनसे सुख और दुख की मात्रा माफी जा सकती है **:-**

1.**तीव्रता**(Intensity) 2.**स्थिरता**(duration) 3.**निश्चिता**(certainty) 4.**निकटता** (Propinquity) या **दूरी**(Remoteness) 5.**उत्पादकता**(Fecundity) 6.**शुद्धता**(Purity) 7.**विस्तार**(Extent)

बेंथम के अनुसार इन सात कसौटीयों के आधार पर सुख–दुख को मापा जा सकता है । अगर सुख दीर्घकालीन है तो वह दुख से अच्छा होता है । यदि सुखो के मात्रा को जोड़कर दुखों के मात्रा से घटाने पर यदि सुख की मात्रा अधिक रहे तो इसका अर्थ है कि कार्य समग्र दृष्टि से अच्छा है और यदि दुख की मात्रा अधिक रहे तो कार्य समग्र दृष्टि से बुरा है । **बेंथम** के अनुसार, " *सुख की मात्रा समान होने पर पुष्पीन(बच्चों का खेल) उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि काव्य पाठ और एक कील चुभने से उतनी ही पीड़ा होती है जितनी की कर्कश कविता सुनने से* "

बेंथम यह भी कहता है कि, " *अधिकतम सुख की गणना करने में प्रत्येक व्यक्ति को एक माना जाएगा और किसी को एक से अधिक नहीं माना जाएगा*"

यह सिद्धांत व्यक्ति के प्रत्येक निजी कृतियों(कार्य) पर ही नहीं वरन सरकार के क्रियाकलापों पर भी समान रूप से लागू होता है क्योंकि **बेंथम** के अनुसार, " *जो व्यक्ति के लिए ठीक है वही समाज व राज्य के लिए भी ठीक है* " समाज वह राज्य व्यक्तियों का योग मात्र है और समाज की प्रकृति

आणविक है अर्थात वह संगठित व्यक्तियों का समूह मात्र है। राजनीतिक क्षेत्रों में इस सिद्धांत का अभिप्राय यह है कि राज्य को केवल वही कार्य करने चाहिए या कानून निर्मित करना चाहिए जिनसे अधिकतम लोगों को अधिकतम लाभ पहुंचे। राज्य वही ठीक है जो उस में निवास करने वाले अधिकतम व्यक्तियों को सुख प्रदान करें। कानून और राज्य का उद्देश्य अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख होना चाहिए अतः अनुपयोगी कानूनों को बदल देना चाहिए। बेंथम ने उपयोगितावाद सिद्धांत का प्रतिपादन मुख्य रूप से विधायकों और राजनीतिज्ञों के लिए किया जिसकी सहायता से वे किसी कानून या नियम के उपयोगिता का निर्धारण उसके परिणाम से ही निश्चित कर सकें इसलिए उपयोगितावाद को ***परिणामवाद*** भी कहा जाता है ।

बेंथम के उपयोगितावाद की प्रमुख विशेषताएँ :–

- प्रकृति ने मानव को दो स्वामियों के अधीन रखा है प्रथम सुख और दूसरा दुख ।
- मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति सुख की प्राप्ति है ।
- अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख ही उपयोगितावाद का आधार है ।
- सुखों में गुणात्मक (Qualitative) अंतर नहीं होता केवल परिणात्मक(Quantitative) या मात्रात्मक अंतर होता है।
- कभी सुख गुरु में समान होते हैं केवल सुखों में मात्रात्मक अंतर होता है जैसे कविता पाठ का सुख भोजन के सुख से मात्रा में अधिक होता है ।
- सुख और दुख के मात्रा को मापा जा सकता है।
- बेंथम ने आनंद और सुख में अंतर किया है, आनंद क्षणिक है, सुख स्थाई ।
- राज्य कार्य के उद्देश्य की अपेक्षा परिणाम का महत्व है ।
- उपयोगितावाद अनुभवमूलक दर्शन है ।
- उपयोगितावाद एक सार्वभौमिक सिद्धांत है ।

आलोचना :–

- उपयोगितावाद पूर्णता भौतिकवादी सिद्धांत है ।
- सुख भौतिक ना होकर मानसिक होता है ।
- केवल सुख मानव के समस्त क्रियाओं का प्रेरक नहीं है।
- मानव के अन्य प्रेरकों की उपेक्षा जैसे प्रेम, दया, त्याग, देश–भक्ति आदि ।
- अमनोवैज्ञानिक सिद्धांत।

- सुख दुख का गलत वर्गीकरण ।
- सुख और दुख में मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों अंतर होते हैं।
- सुख मापक यंत्र त्रुटिपूर्ण है।
- मानव के सुख और दुख को मापा नहीं जा सकता।
- व्यक्तिवादी सिद्धांत।
- अल्पसंख्यकों के सुखों की उपेक्षा ।
- मौलिकता का अभाव।
- साधन के पवित्रता की उपेक्षा।

अनेक आलोचकों ने बेंथम द्वारा प्रस्तुत उपयोगितावाद की कटु आलोचना की है :-

ट्राटस्की के शब्दों में, "उपयोगितावाद *खाना बनाने की किताब मात्र है। "*

कारलाईल के शब्दों में, "*बेंथम की उपयोगितावाद सूकरो का दर्शन(Pig Philosophy है।"*

कार्ल मार्क्स के शब्दों में, " *वह अति दंभी नीरस और पूंजीवादी बुद्धिजीवी है। "*

जे एस मिल के शब्दों में, " *जर्नी बेंथम के विचारों रूपी लड़का जो कभी बड़ा ही नहीं हुआ। "*

निष्कर्ष :- बेंथम के उपयोगितावादी विचारों का ब्रिटिश समाज और राजनीतिक व्यवस्था एक गंभीर रूप से प्रभावित किया क्योंकि उपयोगितावाद के माध्यम से उसने मध्यकालीन राजनीतिक विचारों पर गहरा आघात किया । बेंथम के विचारों का प्रभाव जेम्स मिल जाना स्टील जे एस मिल आदि आगे आने वाले विचारोंको पर भी पड़ा। उपयोगितावाद बेंथम के विचारों की आधारशिला थी, इसी आधारशिला पर आधारित विचारों ने तत्कालीन ब्रिटिश विधिशास्त्र को अत्यधिक प्रभावित किया । विधिशास्त्र पर बेंथम के प्रभाव की तुलना आर्थिक चिंतन पर एडम स्मिथ के प्रभाव से की जाती है, इसलिए बेंथम को विधिशास्त्र का न्यूटन कहा जाता है।